एणी पेरे करूं रामत, मनडा थया महामत।
खंत खरी लागी चित, वालाजीसूं हेत री।। ७ ।।

इस प्रकार की रामत से मन मस्ती से भर गया है और वालाजी से प्रेम में खेलने की चाह और बढ़ गई है।

प्रेमना प्रघल पूर, सूरो मांहें अति सूर।
पिए रस मेली अधुर, सघली सुचेत री।। ८ ।।

सखियां प्रेम से भरपूर हैं। बहादुरों में बहादुर हैं। सब सखियां अधर से अधर मिलाकर अमृत रस पीकर सावधान हो गई हैं।

इंद्रावती करे रंग, रामत न करे भंग।
रमती फरती वाला संग, छबके चुमन देत री।। ९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के साथ खेलती हैं, फिरती हैं तथा बड़े शौक के साथ चुम्बन देती हैं, लेकिन खेल फिर भी नहीं रुकता।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५३३ ।।

राग सिधूडो

ओरो आव वाला आपण घूमडले घूमिए, वाणी विविध पेरे गाऊं।
अनेक रंगे रस उपजावीने, मारा वालैया तूने वालेरी थाऊं।। १ ।।

हे वालाजी! मेरे साथ आओ। हम घूमने (चक्कर लगाने) की रामत खेलें और तरह तरह के गान गाएं। इस प्रकार से अनेक तरह के रस बढ़ाकर वालाजी मैं आपकी प्यारी बन जाऊं।

घोघरे घाटडे स्वर बोलाविए, बीजा अनेक स्वर छे रसाल।
झीण झीणा झीणा झीण झीनेरडा, मीठा मधुरा वली रसाल।। २ ।।

मीठे स्वर से गाएंगे। स्वर बदलेंगे। पहले धीमा, फिर चढ़ता, चढ़ता, चढ़ता, चढ़ता और चढ़ता, मीठी रस भरी वाणी में गाएंगे (जैसे-जैसे खेल तेज होता जाएगा, वैसे-वैसे आवाज भी बढ़ती जाएगी।)

घूमडलो घूमवानो रे वालैया, मूने छे अति घणो कोड।
साम सामा आपण थईने घूमिए, मारा वालैया आपण बांधीने होड।। ३ ।।

हे वालाजी! मुझे घूमडलो घूमने (चक्कर खाते हुए) का बहुत उल्लास है। हे वालाजी! हम आमने-सामने आकर शर्त लगाकर घूमें।

ए रामत अमे रब्दीने रमसूं, साथ सकल तमे रेहेजो रे जोई।
हूं हारूं तो मोपर हंसजो, मारो वालोजी हारे तो हंसजो मा कोई।। ४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह रामत हम शर्त लगाकर खेलेंगे। हे सखियो! तुम खड़ी-खड़ी देखना। मैं हार जाऊं तो मुझ पर हंसना। यदि वालाजी हार जाएं तो हंसना नहीं।

घूमडलो वालो मोसूं घूमे छे, वचन मीठडा रे गाय।
अंग वस्तर भूखण मीठडां लागे, वचे वचे कंठडे रे वलाय।। ५ ।।

वालाजी घूमडला मेरे साथ घूमते हैं। मीठे वचन गाते हैं, उनके अंग के वस्त्र-आभूषण अच्छे लगते हैं। बीच-बीच में गले से लिपटना भी अच्छा लगता है।

Nijanand App

पिउ हारया हारया कहे स्वरमां, हांसी हरखे रे उपजावे।
हूं जीती जीती कहे घोघरे, साथ सहुने हंसावे।। ६ ।।

सब साथ एक स्वर में 'पिया जी हार गए, पिया जी हार गए' कहकर बड़े उमंग से हंसती हैं। 'मैं जीती, मैं जीती' जोर के स्वर में कहकर सब सुन्दरसाथ को हंसाती हैं।

ए रे घूमडले हांसी रे साथने, रहे नहीं केमे झाली।
लडथडे पडे भोम आलोटे, हंसी हंसी पेट आवे रे खाली।। ७ ।।

इस घूमडले की हंसी सुन्दरसाथ से रोके नहीं रुकी। हंसी-हंसी में इतनी हंसीं कि धरती पर गिरकर लोट-पोट होने लगीं तथा उनके पेट में बल पड़ने लगे।

ए रामतडी जोई कहे सखियो, इंद्रावती ए राखी रेख।
साथ सहुने वाली घणूं लागी, मारा वालाजीने वली वसेख।। ८ ।।

इस रामत को देखकर सब सखियां कहती हैं कि श्री इन्द्रावतीजी ने हमारी लाज रख ली। सब सुन्दरसाथ को श्री इन्द्रावतीजी प्यारी लगीं और वालाजी को और भी अच्छी लगीं।

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ५४१ ॥

राग वसंत

कोणियां रमिए रे मारा वाला, गाइए वचन सनेह।
मनसा वाचा करी करमना, सीखो तमने सीखवुं एह।। १ ।।

हे वालाजी! आओ, कोनियां की रामत खेलें। प्यार के वचन गाएं। मन से, वचन से और कर्म से सीखो। मैं आपको रामत सिखाती हूं।

ए रामतडी जोरावर रे, दीजे ठेक अंग वाली।
रमतां सोभा अनेक धरिए, गाइए वचन कर चाली।। २ ।।

यह खेल बड़ा जोरदार है। अंग को मोड़कर कूदना है। रामत खेलने में बड़ी शोभा होगी। हम चाल के अनुसार वचन गाएंगे।

करे रमिए कोणियां रमिए, चरण रामतडी कीजे।
वली रामतमां विलास विलसी, प्रेम तणां सुख लीजे।। ३ ।।

हाथ से खेलिए, कोहनियों से खेलिए, चरण से खेलिए, फिर खेल में अपार आनन्द का सुख लीजिए।

जुओ रे सखियो वालो कोणियां रमतां, भांत भांत अंग वाले।
सखियो रामत बीजी करी नव सके, उभली जोड निहाले।। ४ ।।

हे सखियो! देखो वालाजी कोहनियों की रामत खेलते हैं और तरह-तरह से अंग मोड़ते हैं कोई और सखी ऐसी रामत नहीं कर सकती। सब खड़ी-खड़ी इस जोड़ी को देख रही हैं।

कर मेलीने कोणियां रमिए, कोणी मेलीने करे।
अंगडा वाले नेंणा चाले, मनडां सकलनां हरे।। ५ ।।

हाथ की रामत छोड़कर कोहनियों की रामत करें। फिर कोहनियों की रामत छोड़कर हाथ की रामत करें। अंगों को मोड़ें। आंखों को घुमाकर सबके मन को मोहित करें।

Nijanand App